PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Nai Dunia, New Delhi
Thursday 25th September 2014, Page: 7
Width: 12.13 cms, Height: 24.44 cms, a4, Ref: pmin.2014-09-25.37.135

खतरनाक नहीं हैं सरकारी दवाएं

हालांकि, हर साल पांच फीसद नमूने अमानक व कलर और वजन में भी अमानक निकल रहीं दवाएं

भोपाल (ब्यूरो, मप्र)। सरकारी अस्पताल हो या फिर निजी मेडिकल स्टोर जांच में दवाओं में लगभग एक तरह की कमी मिल रही है। दवा का रंग उड़ गया है या फिर उसका वजन कम है। बुखार उतारने के पैरासिटामॉल सीरप के अलावा अन्य सीरप में भी दवा की मात्रा कम होने की शिकायत मिली है। दवा विशेषज्ञों ने कहा कि अमानक दवा खाने से उसका असर कम हो सकता है, पर मरीज के शरीर पर उसके दुष्प्रभाव नहीं आते हैं।

स्टेट ड्रग लैब में हर साल करीब दो हजार दवाओं के सैंपल जांचे जाते हैं। इनमें सरकारी और निजी मेडिकल स्टोर से लिए गए नमूने होते हैं। इनमें करीब पांच फीसदनमूने हर साल अमानक मिलते हैं। इंडियन फार्माकोपिया द्वारा तय मापदंड पर खरी नहीं उतरतीं तो उन्हें सब स्टैंडर्ड (अमानक) की श्रेणी में रखा जाता है। ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट में एक दर्जन से ज्यादा मापदंड बनाए गए हैं। स्टेट ड्रग लैब के पूर्व ड्रग एनालिस्ट राज किशोर वैद्य ने बताया कि नमूना फेल होने की बड़ी वजह दवा का रंग उड़ा रहना है।

रिटायर्ड सीनियर ड्रग इंस्पेक्टर डीआई चिंचोलकर ने बताया कि रंग उड़ने, दवा की मात्रा कम होने, सीरप की मात्रा कम होने या फिर उसमें घुली दवा की मात्रा कम होने और पैकिंग अच्छी नहीं होने की वजह से ही ज्यादातर दवाएं अमानक निकलती हैं। इससे मरीज को दवा कम असर करेगी, पर उसके दुष्प्रभाव नहीं होते हैं। उन्होंने बताया कि दवा में मूल तत्व की जगह कोई और चीज मिलाई जाए या फिर मूल तत्व बहुत कम हो तो इन दवाओं को स्फूरियस खतरनाक की श्रेणी में रखा जाता हैं, लेकिन अभी तक ऐसी शिकायत नहीं आई है।

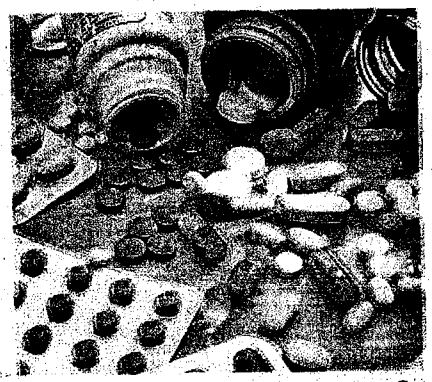

ड्रग लैब में नहीं होती स्पैरलिटी और माइक्रोबायोलॉजी जांच

स्टेट ड्रग लैब में दवाओं की माइक्रोबायोलाजिकल जांचें नहीं हो पाती हैं। इससे सबसे ज्यादा दिक्कत एंटीबायोटिक दवाओं की गुणवत्ता पता करने में होती है। इसके अलावा इंजेक्शन के स्पैरलिटी टेस्ट भी नहीं हो पा रहे हैं। इस जांच में इंजेक्शन को डायल्यूट कर उसे एक मीडिया में डालते हैं, अगर बैक्टीरिया बढ़ते हैं तो इसका मतलब है इंजेक्शन में बैक्टीरिया मौजूद है।

> देश ड्रग लैब को उन्नत करने के लिए केन्द्र को प्रस्ताव भेजा गया था, जिसे स्वीकार कर लिया गया है। करीब 12 करोड़ रुपए से लैब को अपग्रेड किया जाएगा। इसके लिए 75 फीसद राशि केन्द्र से मिलेगी।
>
> - डीडी अग्रवाल, ड्रग कंट्रोलर

ऐसे अमानक होती हैं दवाएं

- टैबलेट का रंग उड़ गया हो
  वजह : स्टोरेज कंडीशन मापदण्डों के अनुसार नहीं होने से।
- स्ट्रिप के भीतर दवाएं टूट रही हों
  वजह : ट्रांसपोर्टेशन सही नहीं होने या फिर दवा मिले तत्वों का अनुपात सही नहीं होने से
- दवाओं का वजन बराबर नहीं होना
  वजह : दवा में कोई भी तत्व तय मात्रा में नहीं होने पर वजन कम-ज्यादा हो जाता है
- मूल तत्व कम-ज्यादा होने पर। हालांकि, एक सीमा तक कमी-पेशी मानक मानी जाती है।
  वजह : मूल दवा महंगी होने के कारण उसकी मात्रा कम मिलाई जाती है।
- सीरप की मात्रा कम निकलना
  वजह : स्टोरेज सही नहीं होने या फिर पैकिंग के दौरान कम मात्रा डालने से
- सीरप में घुली दवा नीचे बैठ जाना
  वजह : दवा और लिक्विड मापदंडों के अनुसार नहीं मिलाया जाना
- 37 डिग्री तापमान में सामान्य टैबलेट का 15 मिनट और शुगर कोटेड का आधे घंटे में पानी में नहीं घुलना
  वजह : दवा में घुलें तत्व (ग्रेडिएंट) की मात्रा तय रेशियो में नहीं होना।